Content

विषयानुक्रमणिका

अध्याय : 1 विषय - प्रवेश

उपन्यास : सामान्य परिचय : युगीन चेतना : साठोत्तरी उपन्यास : व्यंग्य : व्यंग्य की परिभाषा : हिन्दी में व्यंग्य - विचार : व्यंग्याकारों की दृष्टि में व्यंग्य : हास्य और व्यंग्यका अंतर : उपहास : परिहास : विट : बर्लेस्क : व्यंग्य के सन्दर्भ में इन्वेक्टिव तथा लेम्पून : निष्कर्ष : संदर्भ ।

अध्याय : 2 साठोत्तरी व्यंग्यात्मक उपन्यासों का परिचय

आमुख : उपन्यास और व्यंग्य : हिन्दी उपन्यास में व्यंग्य की परम्परा :

वर्गीकरण :

:1: आद्यन्त व्यंग्योन्मुखी उपन्यास :

राग दरबारी : कथा-सूर्य की नयी यात्रा : एक चूहे की मौत : सबहि नचावत राम गोसाई : किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई : दिल एक सादा कागज : महाभोज : कुरु कुरु स्वाहा : नेताजी कहिन : जंगल तंत्रम् : रानी नागफनी की कहानी : इमरतिया : मुरदाघर : धरती धन न अपना : सूखता हुआ तालाब ।

:2: व्यंग्य प्रधान उपन्यास :

आधा गाँव : टोपी शुक्ला : अलग अलग वैतरणी जुलूस : काचघर : तमस : डाक बंगला : सीमाएँ टूटती हैं : उग्रतारा : शहीद और शोहदे : शहर में घूमता आईना : एक पंखडी की तेज़ धार :

बैसाखियोंवाली इमारतें : अठारह सूरज के पौधे : नंगा शहर : पत्तों की बिरादरी : टूटते बिखरते लोग : हड़ताल-हरिकथा : अपना मोर्चा : गोबर गणेश ।

:3: छुटपुट व्यंग्यवाले उपन्यास :

निष्कर्ष : संदर्भ ।

अध्याय : 3 व्यंग्योद्भावक स्थितियाँ

आमुख : विषमता : विसंवादिता : विकृतियाँ : विद्रूपता : बढ़ती राजनीति : मोहभंग : नारी शोषण के नये कोण : भ्रष्टाचार : वस्तुवादी भौतिक चिन्तन : जीवन मूल्यों का विघटन : शैक्षिक मूल्यों का विघटन : व्यंग्यात्मक क्षण : निष्कर्ष : संदर्भ ।

अध्याय : 4 व्यंग्यात्मक उपन्यासों की चरित्र-सृष्टि

आमुख : व्यक्तिगत विशेषता : बाह्य - विशेषताओं का निरूपण : आंतरिक विशेषताओं का निरूपण : सामाजिक या जातिगत विशेषता : पात्रों का वर्गीकरण : चरित्रसृष्टि की विभिन्न पद्धतियाँ : निष्कर्ष : संदर्भ ।

अध्याय : 5 व्यंग्यात्मक परिवेश के नाना आयाम

आमुख : भाषा : व्यंग्यात्मक क्षण :

ग्रामीण परिवेश के व्यंग्यात्मक स्थल :

:1: नगरीय जीवन का दबाव
:2: सामन्तवादी जमींदारों के बदलते चेहरे
:3: पुलिस का रवैया
:4: न्यायतंत्र और रिश्वतखोरी

:5: चुनाव और गुटबन्दियाँ
:6: स्त्री-पुरुषों के अनैतिक सम्बन्ध

नगरीय परिवेश के व्यंग्यात्मक स्थल :

:1: टूटते बिखरते जीवन-मूल्य
:2: यांत्रिक जीवन की त्रासदता
:3: उच्च समाज की रंगीनियाँ
:4: भौतिक समृद्धि की अंधी दौड़
:5: व्यापक भ्रष्टाचार
:6: निम्न समाज का नरक
:7: पुलिस का अभिशाप
:8: मध्य-वर्ग की प्रदर्शन-प्रियता
:9: साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक मूल्यों में पतन की स्थिति

निष्कर्ष : सन्दर्भ ।

अध्याय : 6 व्यंग्यात्मक उपन्यासों का शिल्प एवं भाषिक-संरचना

भूमिका : शिल्प के नये आयाम = फण्टासी : शब्द-सह-चयन : पूर्व-दीप्ति : चेतना प्रवाहशैली : कथा-प्रस्तुति की बहुस्तरीयता अवांतर कथाओं का प्रयोग : भाषिक - संरचना : व्यंग्यात्मक प्रतीक : व्यंग्यात्मक उपमान : व्यंग्यात्मक रूपक : व्यंग्यात्मक विशेषण : व्यंग्यात्मक कहावतें : व्यंग्यात्मक मुहावरे : व्यंग्योक्तियाँ : निष्कर्ष : सन्दर्भ ।

अध्याय : 7 उ प सं हा र

सहायकग्रंथसूची

x x x